प्रबंधकीय विचारधारा

15

शकुन्तला*

प्रबंधन का विकास मानव सभ्यता के विकास में एवं पुरातन युग से ही जुड़ा हुआ है। आधुनिक प्रबंध विज्ञान में भी मानव सभ्यता के आरंभ से चली आ रही पारंपरिक शैली जुड़ी हुई है। विश्व के विभिन्न राष्ट्रों ने समय–समय पर प्रबंध विचारधारा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत, मिस्र, रोम, ग्रीस इत्यादि की प्राचीन सभ्यताएं इसका प्रमाण हैं। चाणक्य द्वारा रचित भारत का महत्वपूर्ण ग्रंथ अर्थ शास्त्र में सार्वजनिक प्रबंध के विभिन्न समस्याओं पर बल दिया गया है। "प्रबंधन का विकास मानव समाज में समूह निवास की उत्पति के साथ षुरू हुआ माना जा सकता है। फिर भी व्यवसाय में प्रबंध का विकास, जीवन तथा व्यवसाय की बढ़ती हुई जटिलताओं के कारण व्यावसायिक संगठन के विभिन्न स्वरूपों के विकास के साथ सहचारी कहा जा सकता है।"

प्रबंधन विचारधारा के विभिन्न स्कूल्सः–

प्रबंधन के महत्व एवं आवश्यकताओं में जैसे–जैसे वृद्धि हुई वैसे–वैसे प्रबंध विचारध ाारा के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोण एवं धारणाओं का विकास हुआ। इन्हें प्रबंध विचारधारा के विभिन्न स्कूलों के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक विचारधारा किसी न किसी स्कूल से संबंधि ात है। प्रबंध विचारधारा के प्रमुख स्कूलों में निम्नलिखित स्कूलों को सम्मिलित किया जाता हैः–

1. शास्त्रीय विचारधारा स्कूलः–

शास्त्रीय विचारधारा का जन्म अर्थशास्त्र के प्रमुख विद्वान 'एडम स्मिथ' के श्रम विभाजन के साथ आरंभ हुआ है। शास्त्रीय विचारधारा प्रबंध को संगठित समूहों के द्वारा काम कराने का एक तरीका मानता है। इसके अनुसार सरकारी काम काज या व्यापार में एक ही प्रक्रिया का प्रयोग होता है। इस प्रकार यह विचारधारा औपचारिक प्रबंध व्यवस्था का अध्ययन करती है। यह विचारधारा प्रबंध सिद्धांत को संक्षिप्त एवं संगठित करने का एक तरीका है, जिससे की व्यवहार को सुधारा जा सकता है।

इस विचारधारा की निम्न प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैंः–

1. यह श्रम विभाजन के सिद्धांत, उद्देश्य एवं क्रियाओं तथा उनके समन्वय संबंधी प्रयासों पर आधारित हैं।
2. यह औपचारिक संगठन से संबद्ध है।
3. यह मेक ग्रेगर के एक्स सिद्धांतों पर आधारित है।
4. यह विचारधारा कार्य निष्पादन हेतु उत्तरदायित्व पर बल देती है।
5. यह केंद्रीकरण पर बल देती है।
6. इस विचार धारा ने अनेक सिद्धांतों को विकसित किया है।

** पुस्तकालायाध्यक्षा, राजकीय महाविद्यालय, जुखाला, ज़िला बिलासपुर (हि. प्र.)*

7. यह कट्टरपंथी है।

2. प्रबंध प्रक्रिया स्कूल या परंपरागत स्कूलः–

इस स्कूल के जन्मदाता हेनरी फेयोल हैं। इसके अतंर्गत प्रबंध एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मानवीय सामूहिक प्रयासों को उद्देश्यानुसार संगठित एवं व्यवस्थित किया जाता है। इस स्कूल में इस विचारधारा की मान्यता है कि प्रबंध कार्य, प्रथाओं और मान्यताओं के आधार पर की जाती है। इसके कार्य पथ का निर्धारण एवं निर्देशन अनुभवों एवं परंपराओं के आधार पर किया जाता है। इस स्कूल के अनुसार प्रबंधक बनाएं नहीं जाते बल्कि प्रबंधकीय प्रतिभा जन्मजात होती है। यह एकल नेतष्त्व को स्वीकार करता है तथा परंपराओं को मान्यता प्रदान करता है।

3. निदेशात्मक स्कूलः–

यह स्कूल इस विचारधारा पर आधारित है कि प्रबंधकों को नीति–निर्धारण के साथ–साथ उसकी क्रियान्विति पर भी जोर देना चाहिए। नीतियों का प्रभावपूर्ण क्रियान्वयन के लिए अधीनस्थों को प्रभावपूर्ण आदेष–निर्देष देने पड़ते हैं। निदेशात्मक स्कूल की यह मान्यता है कि प्रबंधकों में निर्देशन क्षमता अवश्य होनी चाहिए, ताकि वह अधीनस्थ कर्मचारी की तुलना में अधिक सही निर्णय ले सके तथा उसे कार्यरूप में परिणित कराने के लिए अधीनस्थ कर्मचारी का सही मार्ग दर्शन कर सके। इस विचारधारा के अनुसार कर्मचारियों को प्रबंध में हिस्सा नहीं मिलना चाहिए क्योंकि प्रबंधक ही सर्वोपरि है।

4. भागिता स्कूलः–

यह स्कूल प्रजातंत्र की स्थापना का प्रबल समर्थक होता है। इस विचार धारा के अनुसार कर्मचारियों को अपनी बात कहने का भरपूर अवसर दिया जाना चाहिए, उनको प्रबंध में हिस्सा लेने का अवसर मिलना चाहिए और उन्हें सभी निर्णयों में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इनके अनुसार अगर कर्मचारियों को नीति–निर्धारण में सम्मिलित करके उन रीतियों का क्रियान्वयन अत्यन्त सुगम एवं सुविधाजनक हो जाता है। इस प्रकार इसमें एकाकी निर्णयन के स्थान पर सामूहिक निर्णय अधिक उचित एवं व्यावहारिक माना जाता है। इनका मानना है कि अगर कर्मचारियों को संस्था के निर्णयों में भागीदार बनाया जाए एवं उन्हें विभिन्न सभागोष्ठियों में भाग लेने का अवसर दिया जाए, तो उन में संस्था के प्रति अपनत्व की भावना जागृत होगी जिससे उनका स्वैच्छिक सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

5. नियम निष्ठ स्कूलः–

इस विचार धारा की यह मान्यता है कि किसी भी संगठन का संचालन सूचारू रूप से करने के लिए यह आवश्यक है कि संगठन में कार्यरत कर्मचारियों के दायित्व एवं अधिकार स्पष्ट हों, ताकि किसी को अपने कार्यों एवं दायित्व के प्रति कोई भ्रम न रहे, इससे भविष्य में कार्य एवं उत्तरदायित्व में कोई मतभेद उत्पन्न नहीं होगा। नियमनिष्ठ स्कूल को यह विश्वास है कि कार्यक्षेत्र, अधिकार एवं दायित्वों का स्पष्ट विभाजन करके कर्मचारियों की कार्यकुशलता में वृद्धि की जा सकती है। साथ ही कर्मचारियों के आपसी संबंधों में भी मधुरता लाई जा सकती है।

6. तुलनात्मक प्रबंध विचारधारा स्कूलः–

इस विचार धारा के जन्मदाता गोन्जालेज एवं मैक मिलन हैं। इस विचार धारा की मान्यता है कि प्रबंध संस्कृति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। अतः प्रबंध के सिद्धांतों की संस्कृति विषेश तक सीमित प्रयुक्ति संभव हे। यह विचार यह मानता है कि विभिन्न संस्कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए तथा प्रबंध के सामान्य सिद्धांतों को विभिन्न संस्कृतियों के संबंध में संशोधित किया जाना चाहिए।

इस विचारधारा की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैंः–

1. इसे आधुनिक विचारधारा का नाम दिया जा सकता है।
2. प्रबंधन के सिद्धांतों का प्रयोग विशिष्ट संस्कृति तक ही सीमित हो सकता है।
3. विभिन्न संस्कृतियों में प्रबंध के सिद्धांतों की प्रयुक्ति समान रूप से संभव नहीं है।
4. इस स्कूल के मतानुसार प्रबंधन संस्कषति से प्रभावित होता है।

7. सामाजिक प्रणाली स्कूलः–

इस स्कूल के मुख्य प्रर्वतक चेस्टर आई बर्नार्ड माने जाते है। इस प्रणाली में प्रबंध को एक सामाजिक प्रणाली माना जाता है। इस प्रणाली के अनुसार समस्त प्रबंधकीय समस्याओं का समाधान सहकारिता के सिद्धांत में निहित है। सामाजिक प्रणाली विचारधारा इस मत को मानती है कि व्यक्ति की विभिन्न समस्याओं का निपटारा औपचारिक संगठन के स्थान पर अनौपचारिक संगठन के माध्यम से अधिक कुशलतापूर्वक किया जा सकता है। क्योंकि सामाजिक संबंधों का विकास सामाजिक परंपराओं तथा दशाओं का ही फल है, जिन्हें औपचारिक क्रियाओं से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

यह विचारधारा निम्न मान्यताओं पर आधारित हैः–

1. संगठन के आंतरिक परिवर्तन का बाहरी परिवर्तनों के साथ समन्वय स्थापित करना।
2. प्रबंध की समस्याओं का समाधान सहकारिता के सिद्धांत में निहित है।

8. प्रणालीगत प्रबंध स्कूलः–

इस स्कूल का मानना है कि जैसे हमारी शारीरिक क्रियाएं एक बृहतर प्रणाली एवं उपप्रणालियों का परिणाम है वैसे ही व्यावसायिक क्रियाएं भी बृहतर प्रणाली एवं कई उपप्रणाली का परिणाम है। इसलिए प्रबंधकों को चाहिए कि वे भी प्रणालियों क संचालन के जरिए वांछित परिणाम प्राप्त करें। इस विचारधारा के अनुसार प्रत्येक क्रिया दूसरी समस्त क्रियाओं को प्रभावित करती है। अतः समस्त क्रियाओं को एकीकृत करके उनका अध्ययन किया जाना चाहिए, ताकि वांछित परिणाम तथा श्रेष्ठ निर्णय आदि न्यूनतम लागत पर प्राप्त किए जा सकें। इस स्कूल के प्रमुख विचारक 'जार्ज आर टेरी' संस्था को मानव निर्मित प्रणाली मानते हैं, जिसके आंतरिक हिस्से निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु मिलकर कार्य करते हैं और बाह्य हिस्से संस्था के वातावरण एवं सरकार के साथ समायोजन स्थापित करते हैं।

9. निर्णय सिद्धांत स्कूलः–

इस स्कूल का मानना है कि आधुनिक प्रबंध के दो कार्य हैंः–

1. क्या प्राप्त करना है?
2. कैसे प्राप्त करना है?

इस सिद्धांत को मानने वाले विचारकों के अनुसार, निर्णय में समस्त मानवीय क्रियाओं तथा उनसे संबंधित समस्याओं का समाधान निहित है। निर्णयन से हमारा आषय उपलब्ध विकल्पों में से किसी एक सर्वश्रेष्ठ विकल्प का चुनाव करना है। इस विचारधारा में प्रबंधकों को निर्णय लेने की प्रक्रिया एवं क्रियान्वित करने की शक्ति के रूप में माना जाता है।

इस विचारधारा की प्रमुख विषेशताएं निम्न हैंः–

1. निर्णयन की सफलता पर उपक्रम की सफलता निर्भर करती है।
2. यह समस्त मानवीय क्रियाओं का अध्ययन करती है।
3. निर्णयन कार्य महत्वपूर्ण है और प्रबंधकों के लिए चुनौतीपूर्ण है।
4. निर्णयन प्रबंधक का प्रमुख कार्य है।
5. निर्णय तथ्यों के अध्ययन एवं विश्लेषण के बाद लिए जाने चाहिए।

10. गणीतीय स्कूलः–

इस सिद्धांत को मानने वाले विद्वानों के अनुसार, प्रबंध एक तर्कपूर्ण प्रक्रिया है, जिसे गणीतीय नमूनों तथा परिमाणात्मक तथ्यों के द्वारा स्पश्ट किया जा सकता है, जो मापने योग्य है दूसरे शब्दों में प्रबंध गणीतीय आदर्शों का विज्ञान है, जिसके अंतर्गत सभी समस्याओं का निदान तथ्यों में निहित होता है। गणीतीय विचारधारा की सहायता से समस्याओं का निर्धारण तथा विश्लेषण करके निश्चित मॉडल तैयार कर लिए जाते हैं, जिससे कि विवके पूर्ण निर्णय लेना संभव हो सके।

संदर्भ ग्रंथ

1. विकी पीडिया डॉट कॉम

2. बौरा, मुकेश व अन्य द्वारा पुस्तकालय प्रबंधन एवं संगठन